RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-05
Issue-09
September-2020

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]
DOI: https://doi.org/10.31305/rrijm.2020.v05.i09.039

'छायावाद' और प्रसाद की कामायनी

मुकेश कुमार राम

शोध छात्र, हिंदी विभाग वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय आरा

महाकवि जयशंकर प्रसाद की कामायनी पर विचार करने से पहले 'छयावाद 'और उसके लक्षण पर विचार कर लेना ठीक होगा:- छायावादी काव्य में न केवल द्विवेदी युगीन इतिवृतात्मकता का विरोध हुआ अपितु उसकी अविव्यंजना पद्धत्ति में भी परिवर्तन हुआ. कविता अंतर्जगत की ओर उन्मुख हो गई तथा भाषा में सूक्षमता, वक्रता, लाक्षणिकता का समावेश हो गया. प्रणय की अनुभूतियां गहन होती गई तथा उनमें प्रेम मादकता का समावेश हुआ.

इस काल से पूर्व ही भारतीयता नवजागरण का सन्देश फैल रहा था अतः अतीत गौरव की अभिव्यक्ति स्वाधीनता की चेतना] राष्ट्रप्रेम] त्याग और बलिदान] अस्मिता की खोज छायावादी कविता में दिखाई पड़ती है. गाँधीवादी जीवन मूल्यों का छयावाद पर पर्याप्त प्रभाव भी इस बात का प्रमाण है कि उस काल का राजनैतिक परिदृश्य गाँधी जी की सक्रिय भूमिका से परिचालित एवं परिभाषित था.

छायावादी कविता तत्कालीन युग की परिस्थितियों से उद्भूत है. द्विवेदी युग की प्रतिक्रिया के फलसवरूप जहाँ उसमें स्थूलता, अतिशय नैतिकता एवं इतिवृतिमकता का विरोध हुआ वही तत्कालीन पराधीनता ने राष्ट्रीयता आत्म गौरव, मानववाद जैसे मूल्यों का समावेश करा दिया निश्चय ही छायावाद का जन्म द्विवेदी युग की प्रतिक्रिया एवं तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों के कारण हुआ.

छायावाद 'का प्रयोग प्रारम्भ में व्यंग रूप से उन कविताओं के लिए किया गया जो 'अस्पष्ट थी जिनकी छाया अर्थ कहीं और पड़ती थी. कालान्तर में यह नाम उन कवितायों के लिए रूढ़ हो गया जिनमें मानव और प्रकृति के सूक्ष्म सौंदर्य में 'आध्यात्मिक छाया (रहस्यवाद)का भाव होता था और वेदना की रहस्यमयी अनुभूति की लाक्षणिक एवं प्रतीकात्मक शैली में अभिव्यंजना की जाती थी. छायावादी के सवरूप को स्पष्ट करने के लिए प्रमुख विद्वान् द्वारा छायावाद की जो परिभाषाय दी गई है,वह इस प्रकार से है :-

(1)आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार 'छयावाद शब्द को प्रयोग दो अर्थो में समझना चाहिए एक तो रहस्यवाद के अर्थ में जहाँ उसका सम्बन्ध काव्यवस्तु से होता है, अर्थात जहाँ कवि उस अनन्त और अज्ञात प्रियतम को आलम्ब बनाकर अत्यंत चित्रमयी भाषा में प्रेम की अनेक प्रकार से व्यंजना करता है. छायावाद शब्द का दूसरा प्रयोग काव्य शैली या पद्धति विशेष के व्यापक अर्थ में है. " स्पष्ट है कि आचार्य शुक्ल छायावाद का एक अर्थ रहस्वाद मानते हैं और दूसरा अर्थ काव्य की विशिष्ट शैली स्वीकार करते हैं.

(2)जयशंकर प्रसाद के अनुसार, "कविता के क्षेत्र में पौराणिक युग की किसी घटना अथवा देश विदेश की सुन्दरता के वाह्य वर्णन से भिन्न जब वेदना के आधार पर स्वानुभूतिमयी अभिव्यक्ति होने लगी, तब हिंदी में उसे 'छयावाद 'के नाम से अभिहित किया गया. ध्वन्यात्मकता, लाक्षणिकता, सौंदर्य मय प्रतीक विधान तथा उपचार के साथ स्वानुभूति की विवृत्ति छयावाद की विशेषताएं हैं. "

(3)डॉ रामकुमार वर्मा के अनुसार, "परमात्मा की छाया आत्मा में, आत्मा की छाया परमात्मा में पड़ने लगती है, तभी छायावाद की सृष्टि होती है. "

(4)डॉ नागेंद्र के अनुसार, "छायावाद स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह है. यह एक विशेष प्रकार की भाव पद्धति है, जीवन के प्रति विशेष भावात्मक दृष्टिकोण है. "

(5)महादेवी वर्मा के अनुसार, "छायावाद तत्वतः प्रकृति के बीच जीवन का उद्गीय है. "उसका मूल दर्शन सर्वात्मकवाद है. "

(6)आचार्य नन्द दुलारे वाजपेयी के अनुसार, "मानव तथा प्रकृति के सूक्ष्म किन्तु व्यक्त सौंदर्य में आध्यात्मिक छाया का भाव छायावाद की सर्वमान्य व्याख्या हो सकती है. "

(7)आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार, "छायावाद के मूल में पाश्चात्य रहस्वादी भावना अवश्य थी. इस रहस्यवाद की मूल प्रेरणा अंग्रेजी की रोमांटिक भावधारा की कविता से प्राप्त हुई थी. "

कथय और शैली की दृष्टि से छायावाद पूर्ववर्ती और परवर्ती काव्य से अलग है :-(1)आत्माभीव्यक्ति छायावादी कविता द्विवेदी युगीन कविता की प्रतिक्रिया में सामने आई है. द्विवेदी युग में कवि जीवन और जगत इस संबंध में वर्णन करता था. उसकी अभिव्यक्ति में समाज का यथार्थ चित्रण भी उभरा है. वह कभी कुछ सारिक उपभोग की बात कहता है. फैजाबाद में यह विचार त्याग दिए गए.. छायावादी कवि आत्म की ओर उन्मुख हुआ. वह अपने निजीपन को लेकर चला है. कवि ने जो दुख दर्द वेदना सुख सहानुभूति अनुभव की है वह उसकी अपनी है उसे ही वह काव्य में अभिव्यक्ति देना चाहता है. प्रसाद जब अपना परिचय' परिचय' नामक कविता में देते हैं तो उसमें कवि आत्मा भी व्यक्ति है:-

उज्जवल गाथा कैसे गाऊ मधुर चांदनी रातों की.
अरे खिलखिला कर हंसते होने वाली उन बातों की..

RRIJM 2015, All Rights Reserved

मिला कहां व सुख जिसका मैं स्वप्न देख कर जग गया
आलिंगन में आते आते मुस्का कर जो भाग गया..

(2) नारी के प्रति उदात्त भाव :- छायावादी काव्य में नारी के प्रति दांत भावों की अभिव्यंजना हुई है. रीतिकाल में नारी के विलास के गीत गाए जा चुके. भारतेंदु और द्विवेदी युग कि सुधार काल में नारी की समस्याओं के भाव मुखरित किए गए. नारी का नारी पर छायावाद के कभी को बहुत भाया है. उन्होंने नारी के प्रति सहानुभूति रखने के साथ-साथ उस में पाए जाने वाले दया ममता स्पर्श सहिष्णुता प्यार आदि उच्च गुणों का अनुसंधान किया है. इस संबंध में सबसे अच्छे भाव जयशंकर प्रसाद ने अपने कामायनी नामक काव्य में व्यक्त किए है.

नारी! तुम केवल श्रद्धा हो
विश्वास रजत नग पग तल में
पीयूष स्रोत सी बहा करो
जीवन के सुंदर समतल में.

छायावादी कवि के उद्गार ओं में विरह है जैसे:-

विस्मृत होवे बीती बातें अब जीने में कुछ सार नहीं
वह जलती छाती न रही, अब वैसा शीतल प्यार नहीं..

हिंदी साहित्य की अद्वितीय प्रीति कामायनी पर हुए विचारों और विवादों का अपना एक लंबा इतिहास है. इसके प्रकाशन काल से लेकर आज तक हर महत्वपूर्ण समीक्षक ने इसकी रचना संवेदना से गुजरने और अर्थ प्रतिक्रिया को अपनी अपनी दृष्टि से खोलने का प्रयास किए हैं. इस आलोचना प्रक्रिया को केंद्र में न रखकर पारंपरिक काव्य शास्त्रीय मानदंडों या इतर प्रतिमा लो के आधार पर विश्लेषण किया है. आरंभिक काल से कामायनी छिड़े आलोचनात्मक विवादों और बहसों के मूल में प्रगतिशील प्रवृत्तियों का उदय और विकास रहा है. शास्त्रीय आलोचकों की मन्यमनस्कता तथा अनुदार दृष्टि के पीछे कामायनी का जीवन के रूढ़िवादी जड़ रूप का सक्रिय विरोध करना रहा है. समकालीन ओं की उपेक्षा तथा उदासीनता ने इस पर अस्पष्टता दुरुहता भाषा की अस्त-व्यस्तता तथा व्यक्तिकता का आरोप लगाया. उनकी आलोचना अत्यल्प और इस प्रकार की है कि उससे प्रसाद की महान प्रतिभा का अनुमान नहीं लगाया जा सकता.

कामायनी प्रसाद जी की प्रौढ़तम रचना है और हिंदी साहित्य के अनुपम निधि है. जहां तक उसके काव्यतव का प्रश्न है वह अत्यंत निखरा हुआ प्रतीत होता है जितना भाव गंभीर और कल्पना की उड़ान प्रसाद जी ने अपनी कामायनी ने प्रस्तुत की है, इतनी किसी अन्य कवि ने नहीं की. किस ग्रंथ में प्रसाद जी के प्रारंभिक काव्यो जैसी शिथिलता नहीं वरन एक अपूर्व मधुरिमा और भावा भी व्यक्ति कीअपूर्व क्षमता है. इसमें प्रसाद जी की कवि अत्यंत प्रौढ़ और मार्मिक चित्र उपस्थित करने में सफल हुआ है. काव्यात्मक और बौद्धिक दोनों ही दृष्टि ओं से कामायनी बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध हुई है. मानव जीवन की विवेचना करने वाले इस काव्य में कहीं भी नीरसता एवं शुष्कता नहीं. इसमें एक ओर यदि सौंदर्य के दर्शनीय सपनों की भरमार है तो दूसरी ओर जीवन के गवेषणातमक तथ्यों की गंभीर और बौद्धिक विचारधारों का सागर भी उफनता मिलता है. डॉ शिवकुमार मिश्र का कहना है " काव्यात्मक सौंदर्य द्वारा मानव जीवन का इतना गहन विश्लेषणअन्यत्र असंभव है.

जीवन के प्रति जागरूकता,यौवन का मदमस्त उल्लास तथा तदगत अतीत के प्रेम कि अमिट छाप ने ही महाकवि प्रसाद से हिंदी साहित्य को कामायनी जैसा अमर काव्य प्रदान करायाहै. इस महाकाव्य में गहरा पैठने पर हमको आशा निराशा सुख दुख तथा प्रकृति के अत्यंत रोमांचकारी एवं मनोवैज्ञानिक चित्रण देखने को मिलते हैं. यह महाकाव्य प्रसाद जी की अंतिम किंतु सर्वोत्कृष्ट रचना है. इसमें यदि एक ओर प्रलय कालीन सागर की गर्जना निहित है तो दूसरी और उषा की अरुणिमा का कोमल दृश्य भी स्पष्ट है. डॉ शिवकुमार मिश्र का कहना है " कामायानी" आज के युग के लिए अमर वरदान की भाँति है जिसे पाने के लिए भक्त अपने भगवान के चरणों में सदा के लिए तिरोहित हो जाता है

"कामायनी, की कथा वैदिक कालीन प्रलय की गाथा पर आधारित है. यह काव्य हिंदी साहित्य में ही नहीं अपितु विश्व साहित्य मी बेजोड़ कहा जा सकता है. कामायनी के महाकाव्य आधुनिक युग का महाकाव्य है. इसमें प्रसाद जी ने अतीत को आधार मानकर वर्तमान समस्याओं को सुलझाने का पूरा पूरा प्रयत्न किया है. कामायनी के महाकाव्य तत्व पर विचार करते हुए डॉक्टर कन्हैयालाल सहल ने कामायनी दर्शन में लिखा है:- कामायनी के पहले हिंदी साहित्य में प्रियप्रवास और साकेत नामक महाकाव्यों की सृष्टि हो चुकी थी किंतु साकेत और प्रियप्रवास में नवीनता होते हुए भी नवीन जुग का वास्तविक रूप से पूर्ण स्फुरण नहीं है केवल कामायनी ही एक ऐसा महाकाव्य है जो नूतन युग का प्रतिनिधि माना जा सकता है. श्री इलाचंद्र जोशी जी कामायनी को विश्व काव्य मानते हैं. उनका विचार है " वर्तमान हिंदी साहित्य जगत में प्रथम बार एक ऐसे काव्य ग्रंथ प्रकाशित हुआ है जो विश्व काव्य कहे जाने की विशिष्टता रखता है. जोशी जी अन्य हिंदी कवियों में भी ऐसी विशेषता मानते हैं जिन्हें विश्व काव्य की श्रेणी में रखा जा सकता है. लेकिन उनके अनुसार विश्व काव्य के समक्ष संपूर्ण काव्य ग्रंथ के रूप में रखे जाने की योग्यता अकेली कामायनी में पाई जाती है.

जोशी जी के अनुसार कामायनी की रचना मानव के आनंद प्राप्ति की आकांक्षा की तृप्ति के लिए की गई है.

पंत जी का विचार है की कामायानी भारतीय पुनर्जागरण का महाकाव्य है. इसमें शैवागम दर्शन के साथ आधुनिक युग के मनोविज्ञान विकासवाद तथा भौतिक राजनीतिक संघर्ष की अस्पष्ट प्रतिध्वनी भी मिलती है.

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जी कामायनी को रहस्यवाद का प्रथम महाकाव्य मानते हैं. वे कामायनी को मानव सृष्टि तत्व की अपूर्व रत्ना कहते हैं. उनके अनुसार इसकी आरंभिक ४ पंक्तियों में पूरे काव्य का सार तत्व समाहित है.

हिमगिरि के उत्तुंग शिखर पर
बैठ शिला की शीतल छाह
एक पुरुष भीगे नयनों से
देख रहा था प्रलय प्रवाह
नीचे जल था ऊपर हिम था,
एक तत्व की है प्रधानता
कहो उसे जड़ या चेतन.

महादेवी वर्मा जी का विचार है कि प्राचीन साहित्य के बिखरे कथा सूत्र को संयोजित प्रसाद ने जिस कथा की सृष्टि की है वह मानव विकास तत्वों को आदिम इतिहास के आलोक में पुनर सृजित करने के साथ अपनी संकेतिकता से उसे सजीव बनाता है.

रामधारी सिंह दिनकर की कामायनी विषयक धारणा का परिचय उनके लेख कामायानी दोष रहित, दूषण सहित से मिलता है. यह लेख उनकी पुस्तक पंत, प्रसाद और मैथिलीशरण गुप्त मैं संकलित है.

दिनकर जी का विचार है कि कामायनी में मध्यकालीन निवृत्ति प्रधान दर्शन के स्थान पर पुनरुत्थान युग की प्रवृत्ति वादी विचारधारा की स्थापना की गई है. दिनकर जी कामायनी की श्रेष्ठता का भी मूल कारण उसका महाकाव्य नहीं बल्कि कवित्व है जो यत्र तत्र तो सभी सर्गों में दिखाई पड़ता है, किंतु उसका सघन परिचय श्रद्धा, काम और लज्जा सर्गों में विद्यमान है.

आतः छायावाद के विभिन्न रूप तत्व की दृष्टि से कामायनी छायावाद के श्रेष्ठतम महाकाव्य ठहरती है.

संदर्भ ग्रंथ:-

(1) डॉ देवराज, छायावाद:- उत्थान पतन पुनर्मूल्यांकन, आमुख पृष्ठ 7 एवं8
(2) मुक्तिबोध, कामायनी एक पुनर्विचार पृष्ठ 116
(3) डॉ प्रेम शंकर कामायनी का रचना संसार पृष्ठ 149.
(4) डॉ नामवर सिंह इतिहास और आलोचना, पृष्ठ 137.
(5) सुमित्रानंदन पंत, छायावाद:- पुनर्मूल्यांकन पृष्ठ 56.

RRIJM 2015, All Rights Reserved